# युवा समारोहों से युवाओ में लोक संगीत के प्रति उत्साह

**Dr. Sushma Sharma**
Asstt. Professor, Lovely Professional University, Phagwara

वर्तमान समय में युवा वर्ग में जहां विज्ञान, व्यापार, इलैक्ट्रोनिक्स और कमप्यूटर के प्रति उत्साह है वही संगीत के प्रति भी उत्साह की कमी नहीं है। टी.वी. पर होने वाले टैलेंट शो मंच प्रदर्शन आदि के कारण युवा वर्ग में संगीत के प्रति उत्साह बढ़ता जा रहा है वही इस उत्साह को बढ़ाने में महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में होने वाले युवा समारोह भी सहायक हैं।

युवा समारोहों की पृष्ठभूमि पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि इनका संबंध युवाओं से है। राज्यस्तर तथा राष्ट्रीय स्तर पर युवाओं में परस्पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रतियोगिताएँ होती हैं। इनके अलावा युवा समारोह शिक्षण संस्थाओं द्वारा भी आयोजित किए जाते हैं। शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ–साथ संस्कृति से जुड़े रहने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। जिनसे उनका मनोरंजन तो होता ही है साथ ही उनकी प्रतिभा भी उभर कर सामने आती है। एक विश्व विद्यालय में लगभग 800–1000 छात्र–छात्राएं युवा समारोहों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। 350–400 तक विजेता विद्यार्थियों की संख्या होती है। इस प्रकार उभरते कलाकारों तथा प्रतिभाओं को मंच मिलता है। सरकार द्वारा शिक्षा पर प्रतिवर्ष खर्च की जाने वाली राशि की दर यदि 10 प्रतिशत है तो उसमें से एक प्रतिशत सांसकृतिक कार्यक्रमों पर खर्च किया जाता है।

युवा समारोह प्रदेश के खेल एवं सांस्कृतिक विभाग द्वारा भी करवाए जाते हैं। विश्वविद्यालय स्तर पर युवा समारोहों में केवल वहाँ के छात्रा–छात्राएं भी भाग ले सकते हैं परन्तु खेल एवं सांस्कृतिक विभाग द्वारा आयोजित युवा समारोहों में कोई भी व्यक्ति जो 35 वर्ष की आयु तक का हो वह भाग ले सकता है यह युवा समारोह प्रति वर्ष युवाओं को संगीत कला एवं संस्कृति से जोड़ने के लिए किए जाते हैं।

युवा समारोह एक सांस्कृतिक समारोह एवं प्रतियोगिता है। इन युवा समारोहों का स्वरूप योजनाबद्ध तरीके से पूर्व निश्चित होता है। ये समारोह प्रत्येक महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय में प्रति वर्ष शिक्षा सत्र शुरू होने के कछ समय बाद प्रारम्भ हो जाता है। सर्वप्रथम प्रतिभाशाली छात्र छात्राओं को खोजने के लिए एक प्रतियोगिता रखी जाती है। जिसे टैलेंट सर्च कॉम्पटीशन या हिन्दी में प्रतिभा–खोज प्रतियोगिता भी कहा जाता है। इन प्रतियोगिताओं में योग्य छात्र–छात्राओं को चुना

जाता है तथा बाद में अनुभवी कलाकारों द्वारा प्रशिक्षण भी दियाा जाता है। इसमें सर्वप्रथम जोनल यूथ फेस्टीवल होता है। इसमें प्रथम आने वाले कार्यक्रम तथा प्रतिभागी इण्टर जोनल यूथ फेस्टीवल में भाग लेते हैं। इसके बाद इण्टर जोनल में प्रथम आने वाले नोर्थ जोन इण्टर युनिवर्सिटी की प्रतियोगिताओं में भाग लेते है। इसमें उत्तर भारत के विश्वविद्यालयों में परस्पर प्रतियोगिता होती है। इसके बाद प्रथम आने वाले विद्यार्थी (A.I.U) ऑल इण्डिया इन्टर यूनिवर्सिटी या नेशनल यूथ फेस्टीवल में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। इस प्रकार प्रतिभा खोज प्रतियोगिता से राष्ट्रीय स्तर तक आते–आते विद्यार्थी कड़ी परीक्षा से गुजरता है तथा अपनी कला तथा संस्कृति के प्रति समझ को बढ़ाता है।

भारत में विभिन्नता में एकता की तस्वीर को यूं तो किसी आइने की जरूरत नहीं लेकिन इसे अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए कला और संस्कृति को माध्यम बनया जा सकता है और इस माध्यम को सार्थक बनाने में युवा समारोह महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। युवा समारोहों द्वारा लोक संगीत की सभी विधाओं गीत, वाद्य तथा नृत्य का प्रचार–प्रसार बहुत अच्छे स्तर पर हो रहा है। युवा समारोहों द्वारा हमारे पुराने लोक वाद्य जो लुप्त हो रहे हैं उनका संरक्षण हुआ है। विद्यार्थियों को लोक वाद्यों का प्रशिक्षण दिया जाता है साथ ही एकल वादन तथा वृन्द वादन के लिए प्रेरित किया जा रहा है। विद्यार्थी इस प्रकार अपनी पुरानी लोक वाद्य विधओं के विषय में जानते हैं। जो लोकगीत केवल लोक कलाकारों द्वारा गाँवों, मेलों तथा त्यौहारों पर गाए जाते थे वह लोकगीत भी युवा समारोहों से प्रकाश में आए हैं तथा आज का युवावर्ग उन्हें सीखने तथा गाने के लिए उत्साहित है। लोकनृत्य चाहे वह किसी भी प्रदेश का हो युवा समारोहों के कारण युवा वर्ग उन नृत्यों के प्रति जानकारी रखता है। युवा समारोहों से लोकसंगीत का संरक्षण तो हुआ ही है साथ ही युवा वर्ग में अपनी कलाओं और संस्कृति के प्रति उत्साहवर्धन हुआ है। युवावर्ग की प्रतिभा उजागर हो रही है और वह संस्कृति को समझकर उसे सहेजने का कार्य कर रहा है।

**संदर्भ**

संगीत पत्रिका, मई, 1966।

साक्षत्कार – निदेशक युवा कल्याण एवं सांस्कृतिक विभाग, कुरूक्षेत्र, विश्वविद्यालय।